AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत चीन संबंधो में अवसर एवं चुनौतियाँ

ORIGINAL ARTICLE

Author
पंकज
राजनीति विज्ञान विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

शोध सार

21वीं सदी में हमने आधुनिक चीन और भारत का उदय देखा है। एशियाई दिग्गज तेजी से आर्थिक रूप से बढ़ रहे हैं और अपनी सैन्य, वायु और नौसैनिक क्षमताओं का निर्माण कर रहे हैं। उन्हें अपनी सभ्यताओं पर बहुत गर्व है। इससे भी अधिक, वे दुनिया पर हावी होने और महान शक्ति बनने की इच्छा रखते हैं। यह बताया जा सकता है कि स्वयं के प्रति उनकी महत्वाकांक्षा को उनके एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने के प्रमुख कारण के रूप में देखा जा सकता है। भारत और चीन के बीच कई उतार–चढ़ाव वाले जटिल संबंध हैं। वर्तमान समय में, जब दोनों देशों पर प्रखर राष्ट्रवादी नेताओं का शासन है, तो दोनों के बीच मुद्दे पहले की तरह इतने बढ़ गए हैं। सीमा पर लगातार संघर्ष और अन्य देशों के साथ वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर उनके बढ़ते संबंधों के कारण, उन्होंने अपने द्विपक्षीय संबंधों को सुरक्षा दुविधा के चश्मे से देखना शुरू कर दिया है क्योंकि दोनों का मानना है कि वे दूसरे द्वारा घिरे हुए हैं। दोनों देश कई स्तरों पर एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं; चाहे वह सीमाओं पर हो, क्षेत्रीय स्तर पर हो, अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों पर हो, या समुद्री क्षेत्र पर हो।

मुख्य शब्द

वैश्वीकरण, आर्थिक व्यस्था, समुद्री मार्ग, बेल्ट ऑफ रोड.

प्रस्तावना

हिंद महासागर उनके लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक उभरता हुआ क्षेत्र बन गया है, क्योंकि आज के वैश्वीकरण के युग में निरंतर विकास के लिए संसाधन सुरक्षा प्राप्त करना उनकी प्राथमिकता बन गई है। वर्तमान में, भारत और चीन हाइड्रोकार्बन, संसाधनों और खनिजों के लिए विदेशी राज्यों पर निर्भर हैं, जिसके कारण समुद्री शक्ति प्राप्त करना और हिंद महासागर में द्वीप राज्यों को लुभाने के लिए रणनीति विकसित करना उनकी रणनीतिक गणना का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है।

ऐतिहासिक पष्ठभूमि

20वीं सदी के मध्य में भारत और चीन आधुनिक राज्यों के रूप में पुनः उभरे। उन्होंने वैश्वीकृत होने और अंदर की ओर मुड़ने का फैसला किया। हालाँकि, आर्थिक असफलताओं ने उन्हें अपनी अर्थव्यवस्थाएँ खोलने के लिए मजबूर किया। 1978 में चीन और 1991 में भारत में अर्थव्यवस्थाएं खुलने के साथ ही उनके व्यापार के अवसर भी बढ़े। इस बीच, संचार की समुद्री लाइनों को सुरक्षित करने के लिए समुद्री अभिविन्यास का विकास आवश्यक हो

गया है क्योंकि उनका अधिकांश व्यापार समुद्री मार्ग से होता है।

हिंद महासागर में चीन का प्रमुख हित अपने एसएलओसी की रक्षा करना है। यह समझता है कि हिंद महासागर के एसएलओसीएस राज्य और गैर–राज्य अभिनेताओं से अत्यधिक संवेदनशील खतरा हैं। चीन का लगभग 40 प्रतिशत तेल आयात होर्मुज जल डमरू मध्य से होता है और चीन का 82 प्रतिशत तेल आयात मलक्का जल डमरू मध्य से होता है। चीन की रुचि का एक अन्य क्षेत्र उसके कामकाजी नागरिकों और क्षेत्र में उनका बढ़ता निवेश है। अपने हितों की रक्षा के लिए, इसने मित्र देशों के साथ मजबूत आर्थिक और सुरक्षा संबंध बनाकर, सीमित होते हुए भी, नौसैनिक क्षमताएं विकसित की हैं। अपने हितों की रक्षा के लिए, इसने मित्र देशों के साथ मजबूत आर्थिक और सुरक्षा संबंध बनाकर, सीमित होते हुए भी, नौसैनिक क्षमताएं विकसित की हैं।

भारत चीन संघर्ष के प्रमुख कारण

चीन हिंद महासागर में अपनी नौसैनिक उपस्थिति के क्रमिक विस्तार के औचित्य के रूप में अपनी समुद्री डकैती रोधी तैनाती का उपयोग कर रहा है। यह अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए जिबूती, श्रीलंका और पाकिस्तान में बंदरगाह सुविधाओं का विकास कर रहा है, जिसके बारे में भारत, अमेरिका और जापान जैसे राज्यों का अनुमान है कि पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (पीएलएएन) के उपयोग के लिए नौसैनिक अड्डे का निर्माण किया गया है। हालाँकि, आधिकारिक तौर पर चीन इन्हें ओवरसीज़ स्ट्रैटेजिक सपोर्ट पॉइंट्स (OSSP) कहता है। इसके अलावा, चीन का दावा है कि उसकी समुद्री रणनीति युद्ध से इतर सैन्य अभियानों (एमओओटीडब्ल्यू) पर केंद्रित है, जिसमें समुद्री डकैती की रोकथाम और प्रवासी भारतीयों की निकासी शामिल है। इन विकासों के आधार पर, यह संभव है कि निकट भविष्य में हिंद महासागर में चीनी नौसेना की एक बड़ी उपस्थिति होगी।

भारत हिंद महासागर को अपना पिछवाड़ा और क्षेत्र का स्वाभाविक नेता मानता है। इसके संसाधन और व्यापार सुरक्षा और आर्थिक गतिविधियाँ हिंद महासागर में समुद्री स्थिरता पर बहुत निर्भर हैं। हिंद महासागर में प्रमुख शक्ति बनने की उसकी लंबे समय से महत्वाकांक्षा रही है। हाल के दिनों में हिंद महासागर में रणनीतिक नेतृत्व के प्रति भारत की आकांक्षा इस क्षेत्र में शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में पहचाने जाने के दावे में परिलक्षित हुई है।

भारत का मोनरो सिद्धांत कोई आधिकारिक नीति नहीं है बल्कि इस क्षेत्र के संबंध में भारतीय रणनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक लंबे समय से चलने वाला विषय है। जिसके मुताबिक, भारत अपने पड़ोस में किसी भी बाहरी ताकत की सैन्य मौजूदगी को नाजायज मानता है। ऐसे में प्रसिद्ध विश्लेषक के सुब्रमण्यम ने तर्क दिया है कि हिंद महासागर का नेतृत्व भारत की 'प्रकट नियति' का हिस्सा है। फिर भी, चीन भारत के उन दावों को नजरअंदाज करता है कि उसे हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा में अग्रणी के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।

जैसे, चीन ने स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स और बेल्ट एंड रोड पहल जैसी रणनीतियों के माध्यम से भारत का मुकाबला करने की कोशिश की है, जबकि भारत ने एक्ट ईस्ट पॉलिसी, नेकलेस ऑफ डायमंड रणनीति जैसी रणनीतियों के माध्यम से इसका मुकाबला करने का फैसला किया है। कहा जा सकता है कि सुरक्षा दुविधा की स्थिति जिसका वे एक–दूसरे के विरुद्ध सामना कर रहे हैं, हिंद महासागर के जल तक विस्तारित हो गई है। भारत और चीन हिंद महासागर में अपने वाणिज्यिक और सुरक्षा हितों को सुरक्षित करने की होड़ में शामिल हो गए हैं। अपनी नौसैनिक क्षमताओं का निर्माण, बुनियादी ढांचे में निवेश, साझेदारी का निर्माण और अन्य हिंद महासागर राज्यों के साथ मजबूत दोस्ती बनाने की कोशिश ने दो एशियाई दिग्गजों के बीच हिंद महासागर में समुद्री शक्ति के प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है।

हिंद–प्रशांत में चीन–भारत प्रतिद्वंद्विता

भारत और चीन एक–दूसरे के खिलाफ सुरक्षा दुविधा की स्थिति का सामना कर रहे हैं, जहां उनकी सैन्य शक्ति में वृद्धि, चाहे वह आक्रामक हो या रक्षात्मक, दूसरे के लिए खतरा और प्रतिक्रिया का कारण मानी जाती है। मोहन का दावा है कि यह समुद्र में एक वास्तविकता बन रही है, क्योंकि दोनों देश अपनी नौसैनिक ताकत बढ़ा रहे

हैं और इंडो पैसिफिक क्षेत्र में द्वीप राज्यों के साथ साझेदारी विकसित कर रहे हैं। पुस्तक अपने पाठकों को भारत और चीन संबंधों से परिचित कराती है और समुद्री विषय पर प्रकाश डालती है। इसमें समुद्री शक्ति के महत्व, विशेष रूप से संसाधन सुरक्षा के लिए समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने पर चर्चा की गई है।

प्रशांत महासागर में भारत की हलचल और हिंद महासागर में चीन की कार्रवाई पर विस्तार से बताते हुए लेखक दोनों देशों के बीच संघर्ष के बीच अमेरिका द्वारा निभाई जा सकने वाली भूमिका की ओर संकेत करता है। वह आगे तर्क देते हैं कि तीनों देश इंडो–पैसिफिक के भविष्य को आकार देने के लिए त्रिकोणीय संघर्ष में फंसे हुए हैं।

चीन की हिंद महासागर रणनीति का विकास

चीन के विदेशी व्यापार और सुरक्षा के लिए हिंद महासागर क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस मुद्दे पर चीनी दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह क्षेत्र में भारत और अमेरिका के कारण चीन के सामने आने वाली कमजोरियों को उजागर करने के साथ–साथ दीर्घकालिक हिंद महासागर रणनीति विकसित करने के लिए हर अवसर का लाभ उठाने की चीन की जरूरतों के बारे में विस्तार से बताता है। इसके अलावा, लेखक भविष्य की संभावनाओं और रणनीतिक लक्ष्यों पर विस्तार से चर्चा करता है जिनका पालन चीन अपने हितों और वैध अधिकारों की सुरक्षा के लिए हिंद महासागर क्षेत्र में कर सकता है।

अवसर एवं चुनौतियाँ

भारत–चीन समुद्री सुरक्षा संबंधों की समझ विकसित करने पर प्रकाश डालती है। यह स्वीकार करता है कि हिंद महासागर के तटों पर एक राजनयिक प्रतियोगिता पहले ही शुरू हो चुकी है, जो क्षेत्र में नौसैनिक प्रभुत्व के लिए चीन–भारत प्रतियोगिता के भाग्य को निर्धारित करेगी। हिंद महासागर में वैधता का मुद्दा आगे पेश किया गया है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि दो देशों द्वारा एक–दूसरे के विरुद्ध समुद्री प्रतिस्पर्धा को कैसे प्रबंधित किया जा सकता है। अन्य अध्याय हिंद महासागर में चीन कारक के कारण हुए नीतिगत परिवर्तनों की जांच करते हैं। इसके अलावा, यह अनुमान लगाया जा रहा है कि भारत और चीन इस साझा समुद्री क्षेत्र में सहयोग, प्रतिस्पर्धा या टकराव के माध्यम से कैसे आगे बढ़ेंगे। लेखक का मानना है कि यह क्षेत्र के लिए एक प्रमुख रणनीतिक चुनौती है, और निष्कर्ष निकाला है कि चीन–भारत नौसैनिक प्रतिद्वंद्विता कई दशकों के दौरान सामने आने वाली है।

समुद्री शक्ति के महत्व पर केंद्रित है, क्योंकि यह भूमि पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान करते हुए किसी देश को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान कर सकता है। चीन के समुद्री हित पर प्रकाश डालते हुए और यह समुद्री परिचालन स्तर पर भारतीय प्रतिक्रिया की गतिशीलता पर चर्चा करता है। लेखक चीन की प्रगति का मुकाबला करने के लिए परिचालन स्तर पर नौसेना के भीतर बदलाव लाने के महत्व पर जोर देते हैं। इसके अतिरिक्त, पेपर चीन की उपस्थिति का मुकाबला करने और समुद्री संचालन के लिए आगे बढ़ने के लिए भारतीय नौसेना को नए सिरे से सोचने की आवश्यकता की ओर इशारा करता है। भारत और चीन हिंद महासागर में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, वे एडमिरल अल्फ्रेड थायर महान द्वारा दी गई रणनीतियों को अपनाकर ऐसा कर रहे हैं। लेखक महानियन नौसेना सिद्धांत को अपनाने के कारणों पर विस्तार से चर्चा करते हैं। इसके अलावा, वह उन प्रभावों का विश्लेषण करता है जिनका उनकी आक्रामक नौसैनिक रणनीतियों के कारण सामना किया जा सकता है। भगवती लिखती हैं, ''हालाँकि, निकट भविष्य में उनके बीच पूर्ण पैमाने पर युद्ध की संभावना बहुत कम है, लेकिन परमाणु प्रतिरोध के कारण, हिंद महासागर में वर्चस्व की प्रतियोगिता में दोनों नौसेनाओं के बीच अस्थिरता या एक–पराक्रम की स्थिति से इनकार नहीं किया जा सकता है।''

निष्कर्ष

भारत जो खुद को हिंद महासागर का एक अग्रणी राज्य और क्षेत्र का स्वाभाविक नेता मानता है, चीन की बढ़ती उपस्थिति को क्षेत्र में अपनी स्थिति के लिए खतरे के रूप में देखता है।

संदर्भ सूची

1. भगवती, ज्योतिषमा, महानियन सपने और भू–राजनीतिक वास्तविकताएँः क्या भारत और चीन हिंद महासागर में शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व में रह सकते हैं? समुद्री मामलेः *जर्नल ऑफ़ द नेशनल मैरीटाइम फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया* 17, संख्या। 1 (जनवरी 2, 2021): 1-91 https://doi-org/10.1080/09733159.2020.1857574
2. ब्रुस्टर, डेविड, एड. समुद्र में भारत और चीनः हिंद महासागर में नौसेना प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा, भारतः ओयूपी इंडिया, 2018
3. ली, जियाचेंग, चीन की हिंद महासागर रणनीति का विकासरू तर्क और संभावनाएँ, *चीन त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिक अध्ययन* 3, संख्या 04 (2017)रू 481–497।
4. मोहन, सी. राजा. समुद्र मंथनः इंडो–पैसिफिक में चीन–भारत प्रतिद्वंद्विता, संयुक्त राज्य अमेरिकाः ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस, 2012।
5. श्रीकंडे, सुदर्शन, भारत की समुद्री शक्ति को दुर्जेय और भविष्य के लिए तैयार बनाना, भारतः ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 2018
6. सिंह, पावनीत, सामान्य अध्ययन और मुख्य परीक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संबंध, भारतः *मैक ग्रा हिल,* 2021

––==00==––